।। श्री हरिः ।।

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गिय वैष्णव परिषद

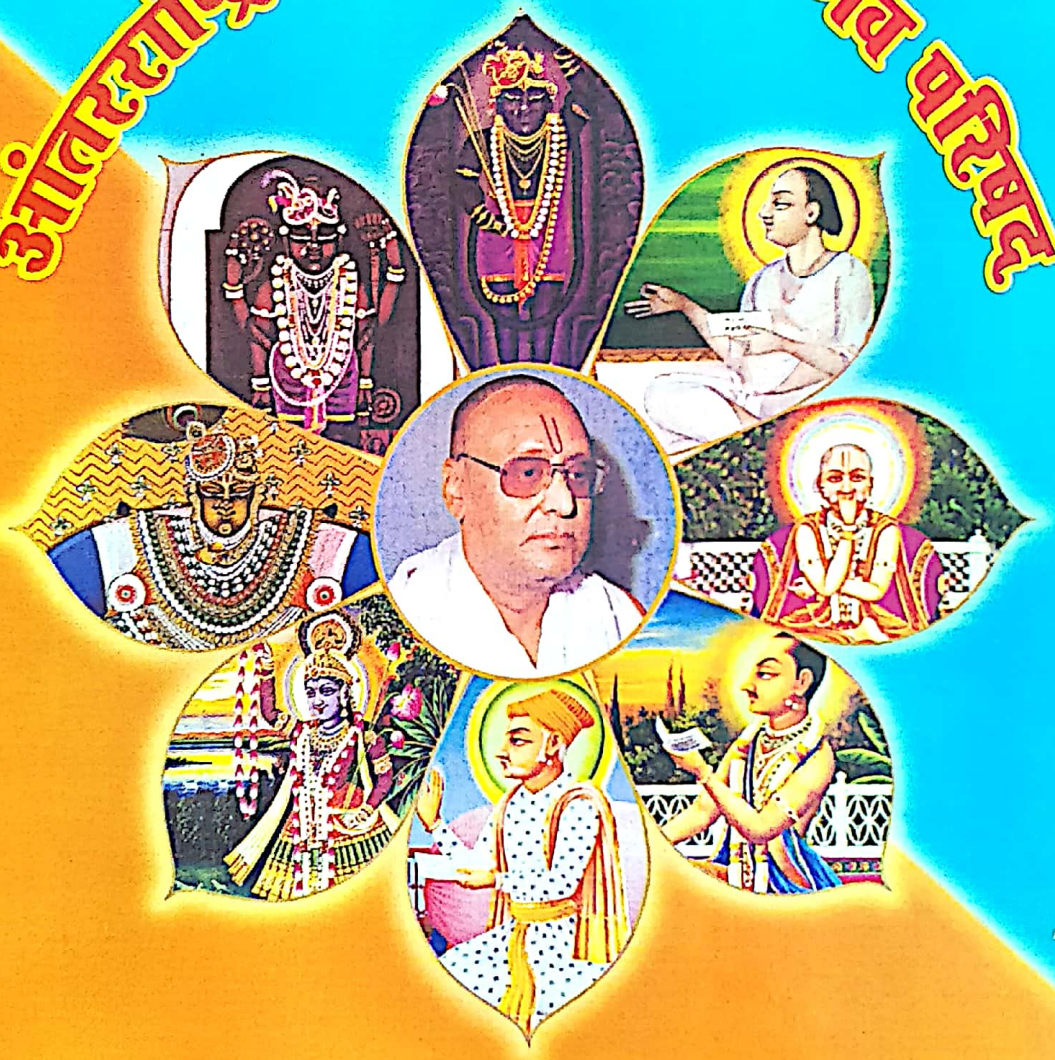

कीर्तन रत्न

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्य क्रम नं. ६

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद

AANTARRASHTRIYA PUSHTIMARGEEYA VAISHNAV PARISAD

15-E, Halai Lohana Niwas, Above Raghuvansi Hall, Sankar Bari Lane,
Off J. S. S. Road, Chira Bazar, Mumbai - 400 002. Tel. : 022 - 2207 6098
Email : vaishnavparishad@gmail.com Website: www.vaishnavparishad.org

REGISTRATION NO. S/15909 OF 1985 80/G NO. आ.नि. (कु) मु.नं. 2080 / 2007 / 2007-2008

AS PER NEW NOTIFICATION FROM 2011-12, 80-G EXEMPTIONS CERTIFICATE IS RENEWED AUTOMATICALLY SINCE OUR TRUST IS MORE THAN THREE YEARS OLD

તા. ૦૪.૦૭.૨૦૧૫

।। શ્રી હરિઃ ।।

આંતરરાષ્ટ્રીય પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ પરિષદ એ શતાબ્દી પુર્ણ કરેલ એક માત્ર પુષ્ટિ માર્ગીય ગૌરવશાળી સંસ્થા છે. સંસ્થા દ્વારા ''પુષ્ટિ રત્ન'' પુસ્તિકાનું પ્રકાશન એ સરાહનીય છે. પરિષદના શ્રી વલ્લભ કૃપા કિર્તન વિભાગ તથા પ.ભ. કિર્તનકાર શ્રી જમુના પ્રસાદજીએ નોટેશન લખી આપી કિર્તનગાન કરવા અભિનંદન.

કિર્તન એ ચિત્તને પ્રભુ સાથે જોડવાનો સીધો અને સરળ ઉપાય છે. શ્રી મહાપ્રભુજી તેમજ શ્રી ગુંસાઈજીએ પુષ્ટી માર્ગમાં મંગળાથી શયન સુધીની અષ્ટયામ સેવામાં સમય અને શ્રુતુક્રમ અનુસાર કિર્તન પ્રણાલી સ્થાપીત કરી છે તે આપશ્રીના સ્વપ્નને પૂરૂં કર્યાનો પરિષદને આનંદ હંમેશ રહેશે.

દેશ-વિદેશમાં કિર્તનનો વધુને વધુ પ્રચાર-પ્રસાર થાય એજ અભ્યર્થના સાથ શુભેચ્છા.

લી. ભગવદીય ભુપેન્દ્ર (ઉર્ફે બટુકભાઈ) શાહ

અધ્યક્ષ

જય શ્રીકૃષ્ણ

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

कीर्तन रत्न - ६

कीर्तन विभाग की अनुक्रमणिका

क्रमांक	राग	विषय	प्रष्ठ सं
१	दुर्गा	परमधन राधानाम आधार	९
२	पटदीप	श्री यमुनाजी यह बिनती	१०
३	चंद्रकौंश	बृज में श्री विठ्ठलनाथ बिराजे	१२
४	देशीकान्हरा	बाजतपग पेंजनीयां	१३
५	बहार	अ-सघनबनछायो ब-चलोरी वृन्दाबन	१५
६	जोनपुरी	बात हिलगकी	१८
७	नन्द	मैया मोरी कामर	१९
८	मेघरंजनी	बरस रे गरजरे	२१
९	बैरागी	हमारो अंबर देहो	२२
१०	तिलक कामोद	सोनेकी गागर लेके	२४
११	अभोगी कान्हरा	माइरी श्याम	२५
१२	गोपी बसंत	छिरकत छींट	२६
१४	मीरा मल्हार	घन म्रदंग	२७
१३	पहाड़ी	शोभितकर नवनीत लिये	२८
१५	बसंत मुखारी	आज हरी खेलत फागबनी	३०
१६	चारूकेशी	गिरधर जब अपनोंकर जान्यों	३२
१७	जन संमोहिनी	दुल्हे मदन गोपाल राधेजू	३३
१८	परज	देखो देखो ब्रज की बीथन	३४
१९	जोग कोंश	बोलेरी आली कुहुक कुहुक	३६
२०	सुघराई	होरी केमिस छलबल लालको	३७
२१	चार रागों की रागमाला	चक्र केधरनहार	३८
२३	केदार	लालन नेक गाइये	३९
२२	पांच रागों की रागमाला	ए मन मान मेरो कह्यो	४०
२४	शिव रंजनी	क्रपातो लालन जूकी	४३
२५		सूरदासजी नो संगीत पक्ष	४४

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : दुर्गा

म स वादी संवादी लख म नी सुर वर्जित मान तबहि बिलावाल थाटकी दुर्गा ले पहचान
इसका थाट है बिलावाल इसकी जाती हे औडव वादी स्वर हे म और संवादी स्वर हे सा, इसके आरोह/अवरोह इस प्रकार हे:- सा, रे, म ,प, ध,सं/ सं ,ध,प म, रे स ,

-पद-

परमधन राधा नाम आधार
जाही पिया मुरलीमें टेरत सुमरत बारंबार
कोटीक रुपधरे नंदनंदन तोउ न पायोपार
''व्यास दास'' अब प्रगट बखानत डार भार में भार

मुखडा ताल-त्रिताल

x	२	०	३
प प प प	**ध म प सं**	**ध ध म प**	**म रे स स**
रा – धा -	ना - म आ	धा – र प	र म ध न

- अंतरा -

म प ध सं ध	**सं सं सं सं**	**ध सं रें सं**	**ध म रे स**
जा - ही- पि	या – मु र	ली- में-	टे - र त
प प प प	**ध म प सं**	**ध ध म प**	**म रे स स**
सु म र त	बा - रं -	बा – र प	र म ध न

- स्थायी -

स रे प म	**प प प प**	**ध म प सं**	**म रे स स**
को -टी क	रु - प ध	रे - न न्द	नं - द न
प प प प	**ध म प सं**	**ध ध म प**	**म रे स स**
तो - उ न	पा – यो –	पा – र प	र म ध न

- अन्तरा -

म प ध सं ध	**सं सं सं सं**	**ध सं रें सं**	**ध म रे स**
व्या – स – दा	– स अ ब	प्र क ट ज	ना – व त
प प प प	**ध म प सं**	**ध ध म प**	**म रे स स**
डा - र भा	- र में -	भा - र प	र म ध न

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : पटदीप

ग कोमल नी सुद्ध ले अरोहन रिध नाँही तबही राग पटदीप को स म सम्वाद बताही
इसका थाट है काफी इसकी जाती हे साडव / संपूर्ण इसका वादी है सा और संवदी है म
इसके आरोह-अवरोह इस प्रकार है:-स ग म प नी सं / सं नी ध प म ग, रे, सा

- पद -

श्री यमुनाजी यह विनती चित धरिये
गिरधरलाल मुखरबिन्दरति जनम जनम नित करिये ।। १ ।।
विष सागर संसार विसम अति विषय संगते डरिये,
काम क्रोध अग्यान तिमीर अति उर अंतर तें हरिये ।।२।।
तुम्हारे निकट बसों निजजन संग रूप देख मन ठरिये,
गाउ गुणगोपाल लालके अष्ट व्याधिते डरिये ।।३।।
त्रिविध दोष हरीकें कालिंदी नेंकक्रपा कर ढरिये.
गोविन्ददास यही वर मांगे तुम्हारे चरण अनुसरिये ।।४।।

मुखडा **तालत्रिताल**

३	X	२	०
प नी नी सं	– निसं ध प	ग ग म म	प प प म
य मु ना जी	– यह बि न	ती – चि त	ध री ये श्री

– अंतरा -

म प ग म	प नी सं सं	प नी सं गं	रें रें सं सं
गि र ध र	ला - ल मु	खा – र बिं	– द र ति
नी नी नी सं	ध प ग म	प प प म	प नी नी सं
ज न म ज	न म चि त	ध रि ये श्री	य मुनाजी –

– स्थायी -

नि स ग म	प प प प	म ग म प	ग ग रे स
वि ष सा –	ग र सं –	सा – र वि	स म अ ति
प प प प	म प ग म	नी ध प प	- - - -
वि ष य सं	- ग ते -	हु री ये –	- - - -

Scanned by CamScanner

– अंतरा -

म प ग म	प नी सं सं	प नी सं गं	रें रें सं सं
का – म क्रो	– ध अ –	ज्ञा – न ति	मि र अ ति
नी नी नी सं	ध प ग म	प प प म	प नी सं सं
उ र अं –	त र ते –	ह रि ये श्री	य मु ना जी

- स्थायी -

ऩि स ग म	प प प प	म ग म प	ग ग रे स
ति हा रे -	पु लि न ब	सों– नि ज	ज न सं ग
प प प प	म प ग म	नी ध प प	पनी संनी ध प
रु – प दे	– ख म न	ठ रि ये –	– – – –

– अंतरा -

म प ग म	प नी सं सं	प नी सं गं	रें रें सं सं
गा – ऊँ –	गु न गो –	पा – ल ला	– ल के –
नी नी नी सं	ध प ग म	प प प म	प नी सं सं
अ – ष्ट व्या	– धी ते –	ड रि ये श्री	य मु ना जी

– स्थायी -

ऩि स ग म	प प प प	म ग म प	ग ग रे स
त्रि वि ध दो	– ष ह र	के – का –	ली – न्दी –
प प प प	म प ग म	नी ध प प	– – – –
ने – क क्र	पा – क र	ढ रि ये –	– – – –

– अंतरा -

म प ग म	प नी सं सं	प नी सं गं	रें रें सं सं
गो- वि न्द	दा - स य	ही - व र	माँ - गे -
नी नी नी सं	ध प ग म	प प प म	प नी सं सं
तु म्हा रे च	र ण अ नु	स रि ये श्री	य मु ना जी

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : चन्द्रकोंस

रिप वर्जित कोमल ग ध औडव कर विस्तार म स वादी-सम्वादी सों चन्द्रकोंस तैयार

इसराग का वादी स्वर है म और सम्वादी स्वर है स इसका थाट है काफी इसकी जाती है औडव इस राग को श्रंगार या राजभोग में गा सकते हैं।

इसके आरोह-अवरोह इस प्रकार हैं :- स, ग़ म ध़ नी सं, सं नी ध़ म ग़ म ग़ स

- पद -

ब्रज में श्री विट्ठल नाथ बिराजे ।।
जिनको परम मनोहर श्रीमुख, देखत ही अघ भाजे ।। १ ।।
तिनके पद प्रताप तेजते, सेवक जन सब गाजे ।।
छितस्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ल, भक्त हेत सब काजे ।। २ ।।

मुखड़ा **त्रिताल**

३	X	२	०
ग़ म ध़ नी	सं सं नी सं	नि ध़ म म	ग़ म ग़ स
ब्र ज में श्री	वि -ट्ठल	ना – थ बि	रा – जे –

अंतरा

X	२	३	०
ग़ म ध़ नी	सं नी सं सं	नी सं ग़ं ग़ं	मं ग़ं सं सं
जि न को –	प र म म	नो – ह र	श्री – मु ख
सं सं नी सं	नी ध़ म म	ग़ म ग़ सा	ग़ म ध़ नी
दे – ख त	ही – अ घ	भा – जे –	ब्र ज में श्री

स्थायी

सा सा म ग़	म म म म	ग़ ग़ म ध़	ग़ म ग़ सा
जि न के -	प द - प्र	ता – प ते	– ज ते –
ग़ म ग़ सा	नि़ सा ध़ नी़	सा सा म ग़	म म म म
से – व क	ज न स ब	गा – – –	जे – – –

अंतरा

ग़ म ध़ नी	सं नी सं सं	नी सं ग़ं ग़ं	मं ग़ं सं सं
छि - त स्वा	- मी गि रि	ध र न श्री	वि – ठ्ठ ल
सं सं नी सं	नी ध़ म म	ग़ म ग़ सा	ग़ म ध़ नी
प्र क ट भ	- क्त हि त	का – जे -	ब्र ज में श्री

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : देशी कान्हरा

नी को कोमल रूप ले ग ध वर्जित आरोही ग कोमल सम्वादी प रे जानत देसी मोहि
यह राग कान्हरा का ही एक प्रकार हे इस राग का थाट हे आसावरी इसकी जाती हे औडव सम्पूर्ण इस रागमें बाल लीला के पदका गान बहुत कर्ण प्रिय लगता हे इस राग को श्रगार सन्मुख गाना उपयुक्त होगा इसके आरोह-अवरोह इस प्रकार है :-
स, रे, म, प, नी, सं / सं, नी, ध, प, म, ग, रे, स

बाजत पग पेंजनीयां रूनझुन ।।
हरिके तन जगमगात बिच बिच, जटित कोटिक मनी ।।१।।
उठत तान तरंग बिच बिच, जमी राग रागिनी,
धरत पग डग मगात आंगन, चलत त्रिभूवन धनी ।।२।।
तिलक चारू ललाट शोभा, जात कापे गनी,
अमी काज मयंक उपर, मानों बालक फनी ।।३।।
निरख बाल विनोद जसुमति, होत आनन्द घनी
सूरप्रभु पर वार डारों, कोटि मनमथ धनी ।।४।।

मुखड़ा ताल: त्रिताल

०	३	x	२
- स रे नी	स स रे प	ग ग रे स	रे नी स स
बा ज त	प ग पें –	ज नी यां –	रू न झु न
म प सं नी	सं सं सं सं	प नी सं गं	रें रें सं सं
ह रि के –	त न ज ग	म गा – त	बि च बि च
सं रें नी सं	प नी म प	रे ग रे स	रे नी स स
ज टि त –	को – टि क	म नी – –	रु न झु न

स्थायी

– रे म म	प प प प	रे म नी प	ग ग रे स
उ ठ - त	ता – न त	रं – – ग	बि च बि च
– स रे नी	स स रे प	ग ग रे स	रे नी स स
ज मी – रा	ग रा – गि	नी – – –	रु न झु न

Scanned by CamScanner

अंतरा

म प सं नी	सं सं सं सं	प नी सं गं	रें रें सं सं
ध र – त	प ग ड ग	म गा – त	आं – ग न
सं रें नी सं	प नी म प	रे ग रे स	रे नी स स
च ल – त	त्रि भू व न	ध नी – –	– – – –

स्थायी

– रे म म	प प प प	रे म नी प	ग ग रे स
ति ल – क	चा – रु ल	ला – – ट	शो – भा –
– स रे नी	स स रे प	ग ग रे स	रे नी स स
– जा – त	का – पे –	ग नी – –	रु न झु न

अन्तरा

म प सं नी	सं सं सं सं	प नी सं गं	रें रें सं सं
अ मी – –	का – ज म	यं – – क	उ – प र
सं रें नि सं	प नी म प	रे ग रे स	रे नी स स
मा – नों –	बा – ल क	फ नी – –	रु न झु न

स्थायी

– रे म म	प प प प	रे म नि प	ग ग रे स
– नि र ख	बा – ल वि	नो – – द	ज सु म ति
– स रे नी	स स रे प	ग ग रे स	रे नी स स
– हो – त	आ – न न्द	घ नी – –	– – – –

अन्तरा

म प सं नी	सं सं सं सं	प नी सं गं	रें रें सं सं
सू – – र	प्र भु प र	वा – – र	डा – रों –
सं रें नी सं	प नी म प	रे ग रे स	रे नी स स
को – टि क	म न म थ	ध नी – –	रु न झु न

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

रागः बहार

चढ़त रे उतरत धा बरज कोमल कर गंधार दोउ निसाद संवाद म सा साडव राग बहार । इस राग का वादी स्वर है म और संवदी है स इसकी जाती है साडव यह रितु संधि का राग है बसंत राग के पहले इसे गाया जाता हे इसकी प्रकृति चंचल है इसके आरोह और अवरोह इस प्रकार है

नी सा ग म ,प ग म, नी, ध नी सां / सां नी प म प ग म रे सा

पकड़- सा म , प ग म, नी ध नी सा

- पद -

सघन बन छायो प्रफुलित द्रुम बेली भयो हुलास ब्रज जन मन
ठोर ठोर कोकिल कल कूजत करत गुंजार मधुप गण ।।१।।
भयो प्रगट ऋतुराज आज सखी बास कियो सुनियत वृन्दावन
रसिक प्रीतम पिय सों रस बिलसों आन अर्प्यो सखी तन मन धन ।।२।।

x	२	०	३
नी नी नी ध	नी नी सां सां	ग म रे सा	रे रे स स
छा - - -	यो - प्र फु	लि त द्रु म	बे – ली -
सा सा म म	म प ग म	नीध नीसं सं प	म प ग म
भ यो – हु	ला स ब्र ज	जन मन – स	घ न ब न

अन्तरा

ग म नी ध	नी नी सां सां	नी नी सां सां	नीसं रेंसं नी ध
ठो – र ठो	– र को –	कि ल क ल	कू – – ज त
गं गं गं मं	रें रें सां सां	नी नी नी ध	सं नी सां सं
क र त गुं	जा – र म	धु – – प	ग न – स

स्थायी

नी सां नी प	प प म प	ग ग ग म	रे रे सा सा
भ यो – प्र	ग ट ऋ तु	रा - ज आ	– ज स खी
स म म म	म प ग म	नी ध नी नी	सं नी सं सं
बा - स कि	यो – सु नि	य त वृ -	न्दा – व न

अंतरा

ग म नी ध	नी नी सां सां	नी नी सां सां	नीसं रेंसं नी ध
र सि क प्री	त म पि य	सों - र स	बि – ल – सों
गं गं गं मं	रें रें सां सां	नी नी नी ध	नी नी सां सां
आ - न अ	र्प्यो – स खी	त न म न	ध न – स

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

रागः बहार

चलोरीब्रिन्दाबन बसंत आयो,
फूल रहे फूलन के झोंरा मरुत मकरंद उडायो ।।१।।
मधुकर कीर कोकिला औरखग, कोलाहल उपजायो,
नाचत स्याम नचावत श्यामा राधाजू राग जमायो ।।२।।
चोवा चन्दन बूका बंदन लाल गुलाल उडायो,
व्यास स्वामिनी की छबि निरखत रोमरोम सुख पायो ।।३।।

मुखड़ा ताल: त्रिताल

०	३	X	२
नि सं नि प	म प ग म	नि नि नि ध	नि नि सं सं
च लो री ब्रि	न्दा - व न	व सं – त	आ – यो –

अंतरा

म प नी ध	नि नी सं सं	नि नी सं सं	निसं रेंसं नी ध
फू – ल र	हे - फु -	ल न के –	झों- -- रा -
गं गं गं मं-	रें रें सं सं	नी नी नी ध	नी नी सं सं
म रु त मक	रं – द उ	डा – – –	यो - - -

स्थायी

नी सं नी प	प प म प	ग ग ग म	रे रे स स
म धु क र	की – र को	– कि ला –	औ र ख ग
स म म म	म प ग म	नी ध नी नी	सं नी सं सं
को – ला –	ह ल उ प	जा – – –	यो – – –

अंतरा

म प नी ध	नी नी सं सं	नी नी सं सं	निसं रेंसं नी ध
ना – च त	श्या – म न	चा – व त	श्या – माँ –
गं गं गं मं	रें रें सं सं	नी नी नी ध	नी नी सं सं
रा – धा जु	रा – ग ज	मा – – –	यो – – –

Scanned by CamScanner

स्थायी

नी सं नी प	प प म प	ग ग ग म	रे रे स स
चो – वा -	च – न्द न	बू – का -	बं – द न
स म म म	म प ग म	नी ध नी नी	सं नी सं सं
ला – ल गु	ला – ल उ	डा - - -	यो - - -

अंतरा

म प नी ध	नी नी सं सं	नी नी सं सं	नीसं रेंसं नी ध
व्या – सस्वा	– मी नी –	की – छ बि	नी- र- ख त
गं गं गं मं	रें रें सं सं	नी नी नी ध	नी नी सं सं
रो – म रो	– म सु ख	पा – – –	यो – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग:- जोनपूरी

कोमल ग ध नी सुर कहे, आरोही गाहान वादी ध संवादि ग जौनपुरी पहचान। **इस राग का थाट है असावरी इसकी जाती है साडव-सम्पूर्ण इसका वादी है ध और** संवादी है ग इस रागमें राजभोग दर्सन हिलग के पदों का गान किया जाता है ! इस राग के आरोह-अवरोह इस प्रकार है:-

स, रे, म, प, ध नी सं / सं, नी, ध, प, म, ग, रे, स

पद

बात हिलगकी कासों कहिये.
सुनरी सखी व्यथा या मनकी, समझ समझ मन चुपकर रहिये ।। १ ।।
मरमी बिना मरम को जाने यह उपहास जान जिय सहिये,
'चत्रभुज प्रभु' गिरधरन मिलें जब तब ही सब सुख पइये ।। २ ।।

मुखड़ा ताल: अद्ध त्रिताल

३	x	२	०
म पधा निसं नी	सं सं सं सं	रें नी रें सं	ध नी प ध
– त- – ही	ल ग की -	का – सों –	क हि ये बा

अन्तरा

म प ध नी	सं नी सं सं	नी नी रें सं	ध नी प प
सु न रि –	स खी – व्य	था – या –	म न की -
प प गं गं	रें रें सं सं	रें नी रें सं	ध नी प ध
स म झ स	म झ म न	चु प क र	र ही ये बा

स्थायी

रे म प नी	ध ध प प	ध म पध मप	ग ग रे स
म र मी –	बि ना - म	र म को- --	जा – ने –
सा रे म म	प प म प	नी ध प प	– – – –
य ह उ प	हा – स जा	– न जी य	स हि ये –

अन्तरा

म प ध नी	सं नी सं सं	नी नी रें सं	ध नी प प
च त्र भु ज	प्र भु गि र	ध र न मि	ले – ज ब
प प गं गं	रें रें सं सं	रें नी रें सं	ध नी प ध
त ब ही –	स ब सु ख	पै – ये –	– – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग:-नन्द

दोनों मध्यम लग रहे आरोहण रे हौंन, म स वादी/सम्वादी ते नंद राग पहचान// इस रागका थाट है कल्याण इस की जाती है साडव- सम्पूर्ण इसके आरोह / अवरोह इस प्रकार हैं :- स,गमप, धनीप, धमप,सं ।। संनीधप, मपगम,रेस

पद

मैया मोरी कामर कोंने लयी,
गाय चरावन जात ब्रिन्दावन खिरकते भाज गयी ।। १ ।।
एक कहै हम कामर देखी सुरभि खाय गयी,
एक कहे तेरी कारी कामरिया,जमुनामें जात बही ।। २ ।।
एक कहे नाचो हम आगे कामर देहों नई,
सूरदास प्रभु यसुमति आगे असुवन धार बही ।। ३ ।।

मुखड़ा - ताल त्रिताल

३	X	२	०
ध प रे स	ग ग ग ग	ग म प ध	नि प ध मं
मै या मो री	का – म र	को – ने ल	इ - - -

अंतरा

३	X	२	०
ग म प नी	सं नी सं सं	नि नि निसं	ध ध प प
गा – य च	रा - व न	जा – त वृ	न्दा – ब न
नि नि नि सं	ध ध प मं	प प प प	ध प रे स
खी र क ते	भा – ज ग	इ – – –	मै या मोरि

स्थायी

ग ग म ग	प प प प	नी नी नी प	ध मं प प
ए – क क	हे – ते रि	का – म र	दे – खी –
ध प रे स	ग ग म ग	प प प प	– – – –
सु र भी –	खा – य ग	ई – – –	– – – –

अन्तरा

ग म प नी	सं नी सं सं	नी नी नी सं	ध ध प प
ए – क क	है – ते री	का – री –	का म री या
नि नि निसं	ध ध प मं	प प मं प	ध प रे स
ज मु ना में	जा – त ब	ही – – –	मे या मो रि

Scanned by CamScanner

स्थाई

ग ग म ग	प प प प	नी नी नी प	ध मं प प
ए – क क	है – ना –	चो – ह म	आ – गे –
ध प रे स	ग ग म ग	प प प प	– – – –
का – म र	दे – हों न	ई – – –	– – – –

अन्तरा

ग म प नी	सं नी सं सं	नी नी नी सं	ध ध प प
सू – र दा	– स प्र भु	य सु म ति	आ – गे –
नि नि निसं	ध ध प मं	प प मं प	ध प रे स
अ सु व न	धा – र ब	ही – – –	मै या मो री

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग :- मेघ रंजनी

रे कोमल कर मानिये म स संवाद संजोय. प ध वर्जित औडव लिये मेघरंजनी होय ।।
इसका थाट है काफी इसकी जाती है औडव वादि संवादी स्वर है म व स वर्षाकाल में किसी भीसमय में यह राग गायाजाता है:-

बरसरे गरजरे सुहाए मेघा तें हरिको रंग पायो,
भीजन दे पीताम्बर सारि बडी बडी बूंदन आयो मेघा ।। १ ।।
ठाडे हँसत राधिका के संगराग मल्हार जमायो मेघा,
परमानन्दप्रभु तरुवरकेतर लालकरत मन भायो मेघा ।। २ ।।

मुखड़ा ताल-त्रिताल

३	X	२	०
नी म प सं	– – – –	नी म प ग	– – – –
ब र स रे	– – – –	ग र ज रे	– – – –
म रे रे स	रे रे स स	स स म रे	प प म प
सु हा – ये	मे – घा –	तें – ह री	को – रं ग
मप निसं पनी संरें	सं नी म प	सं नी म प	सं नी म प
पा – – –	यो ब र स	रे ग र ज	रे ब र स

अन्तरा

म प नीध नी	सं नी सं सं	नी सं रें सं	नि सं नि प
भी – ज- न	दे – पी –	ता – म्ब र	सा – री –
प रें सं रें	नि सं नि प	ग ग ग म	रे रे स स
ब डी ब डी	बू – द न	आ – यो –	मे – घा –

स्थाई

स स म रे	प प म प	ग ग ग म	रे रे स स
ठा – डे –	हँ स त रा	– धि का –	के – सं ग
प रें सं रें	नी सं नी प	ग ग ग म	रे रे स स
रा – ग म	ल्हा – र ज	मा – यो –	मे – घा –

अन्तरा

म प नीध नी	सं नी सं सं	नी सं रें सं	नि सं नि प
प र मा –	न न्द प्र भू	त रु व र	के – त र
प रें सं रें	नि सं नि प	ग ग ग म	रे रे स स
ला – ल क	र त म न	भा – यो –	में – धा –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग :- बेरागी

रे नी कोमलकर जानिए भेरव थाट ही मान. ग ध स्वर वर्जित किये औडव जातीजान ।।

यह प्रात: कालीन राग है इसकी जाती औडव है इसका थाट भेरव है

इसके आरोह/अवरोह इस प्रकार हे;-

स, रे, म, प, नी , सं, सं, नी, प, म, रे, स इस राग में व्रतचर्या के पद गाये जा सकते हें

पद

हमारो अम्बर देहो मुरारी,
लेकर चीर कदम चढ़बेठे हम जलमांझ उघारी ।। १ ।।
तटपर बिना वसन क्यों आवें लाज लगतहे भारी,
चोली हार तुम्हीकों दीने चीर हमें देहो डारी ।। २ ।।
तुम यह बात अचंभो भाखत नागी आवो नारी,
सूरस्याम कछु नेह करोजू सीत गयो तनभारी ।। ३ ।।

मुखड़ा

३	x	२	०
स रे म म	प नी प म	रे रे स नी	रे रे स स
मा – रो -	अ - म्ब र	दे – हो मु	रा – री ह

अन्तरा

x	२	०	३
म प नी नी	सं सं सं सं	प नी सं रें	मं रें सं सं
ले – क र	ची – र क	द म्ब च ढ़	बै – ठे –
सं रें सं नी	प नी प म	रे रे स स	स रे म म
ह म ज ल	मां - झ उ	घा – री ह	मा – रो –

Scanned by CamScanner

स्थायी

स रे म म	प प म म	प नी प म	रे रे स स
त ट प र	बि ना – ब	स न क्यों –	आ – वें –
प नी प म	रे रे स नी	रे रे स स	स रे म म
ला – ज ल	ग त हे –	भा – रि –	– – – –
म प नी नी	सं सं सं सं	प नी सं रें	मं रें सं सं
चो – ली –	हा - र तु	म्ही – कों –	दी – ने –
सं रें सं नी	प नी प म	रे रे स स	स रे म म
ची – र ह	में – दे हो	डा – रि –	– – – –

स्थायी

स रे म म	प प म म	प नी प म	रे रे स स
तु म य ह	बा – त अ	चं - भो –	भा – ख त
प नी प म	रे रे स नी	रे रे स स	स रे म म
ना – गी –	आ – वो -	ना – री -	- - - -

अन्तरा

म प नी नी	सं सं सं सं	प नी सं रें	मं रें सं सं
सू – र श्याम	– म क छू	ने - ह क	रो – जू –
सं रें सं नी	प नी प म	रे रे स स	स रे म म
सी – त ल	ग त अ ति	भा – री –	– – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग:- तिलक कामोद

शाडव सम्पूरण कह्यो आरोही ध नाहीं,रे प वादी संवादी ते तिलक कामोद बताहि ।
इस रागका थाट है खमाच इसकी जाती है शाडव सम्पूर्ण इसका वादी/सम्वादी है रे प इस राग मैं पनघटके पद गाए जासकते हैं इसमें ठुमरी गायन अधिक होता है । इसके आरोह अवरोह इस प्रकार हें:- सरेगस, रेमपध मपसं/संप धमग, सरेगसऩी

पद

सोनेकी गागर लेकें पनियां भरन चली, यमुना के नीर तीर धुनसुन ठठकी,
नंदको दुलारो प्यारो मुरली बजावे ठाडो,द्रगन कीचोट मेरे हिये माँझ अटकी ।। १ ।।
एकघरी द्वे जु भईतनकीसुधनारही,ठगोरी सी ठाडी भई देख रूप चटकी,
धोन्धी के प्रभुप्यारो प्रेमको प्रवाह बाढ्यो लोकलाज कुलकान दियो सब पटकी ।। २ ।।

मुखड़ा

०	३	X	२
रे ग रे प	म ग स ऩी	प़ प़ ऩी स	रे ग स स
सो ने की गा	ग र ले के	प नि यां भ	र न च ली
रे रे म म	प प प प	रे म प ध	म ग स ऩी
य मु ना के	नी र ती र	धु न सु न	ठ ठ की –

अन्तरा

X	२	०	३
म म म म	प प नी नी	सं सं सं सं	नी रें सं सं
नं द को दु	ला रो प्या रो	मु र ली ब	जा वे ठा डो
प नी सं रें	नि ध प प	रे म प ध	म ग स ऩी
द्र ग न की	चो ट मे रे	हि ये माँ झ	अ ट की –

स्थायी

रे रे म म	प प प प	रे म प ध	म ग स स
ए क घ री	द्वे जु भ इ	प ल की सु	ध ना र ही
रे ग रे प	म ग स ऩी	प़ प़ ऩी स	रे ग स स
ठ गो री सी	ठा डी भ यी	दे ख रु प	च ट की –

अन्तरा

म म म म	प प नी नी	सं सं सं सं	नी रें सं सं
धोन्धीके प्र	भू –प्या रो	प्रे म को प्र	वा ह बा ढ्यो
प नी सं रें	नि ध प प	रे म प ध	म ग स ऩी
लो क ला ज	कु ल का ज	दि यो स ब	प ट की –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

रागः- आभोगी कान्हरा

प नी स्वर बचाय कें, ग कोमल ले गाय म स वादी संवादी ते,औडव राग सुहाय ।।
इसके आरोह - अवरोह इस प्रकार हेंः- स, रे, ग़, म, ध, सं, सं, ध, म, ग़, रे, स

माईरी श्याम लग्यो संग डोले, जित जाऊँ तित आडोही आवे बिना बुलाये बोले ।। १ ।।
कहा करों इन नेनन लोभी बस कीने बिन मोलें,
कुम्भनदसप्रभु गिरिधरनागर, हँस हँस घूंघट खोले ।। २ ।।

मुखडा		त्रिताल	
३	X	२	०
ध़ स रे रे	ग़ – ग़ ग़	रे रे ग़ म	रे रे स स
मा इ री –	श्या – म ल	गयो – सं ग	डो – ले –

अन्तरा

X	२	०	३
म म ध ध	सं सं सं सं	ध सं रें रें	ग़ं मं रें सं
जि त जा -	ऊँ – ति त	आ - डो ही	आ – वे –
सं रें सं सं	ध म ग़ म	रे रे स स	ध़ स रे रे
बि ना - बु	ला – ये –	बो – ले –	मा ई री –

स्थायी

ध़ स म ग़	म म म म	ग़ ग़ ग़ म	रे रे स स
क हा – क	रों – इ न	नै – न न	लो – भी –
ग़ म रे स	ध़ स रे रे	ग़ म रे स	ध़ स रे रे
ब स की –	ने – बि न	मो – ले –	– – – –

अन्तरा

म म ध ध	सं सं सं सं	ध सं रें रें	ग़ं मं रें सं
कु - म्भ न	दा स प्र भु	गि रि ध र	ना – ग़ र
सं रें सं सं	ध म ग़ म	रे रे स स	ध़ स रे रे
हँ स हँ स	घूं – घ ट	खो – ले –	– – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग:- गोपीबसंत

ग ध नी कोमल लगरहे दीनों रिषभ हटाय स प वादी संवादी ते गोपीबसंत कहाय ।

इस राग का थाट है आसावरीइसका वादी स्वरहै स और सम्वादी स्वरहै प इसकी जाती है। इसके आरोह/अवरोह इस प्रकार है:- स ग़ म प ध़ नी़ सं / सं नी़ ध़ प म ग़ स

छिरकत छीटछबीली श्रीराधे चन्दन भरभर झोरीहो
अबीरगुलाल विविध रंगसोंधोलोचन भर गई रोरी हो ।। १ ।।
सर्वस्वकियो रसिककुमारी प्रेमफंद की डोरी हो,
सुरप्रभु गिरधरनलालकों देरही प्रेम अकोरी हो ।। २ ।।

मुखड़ा

०	३	X	२
ध़ नी़ गं सं	ध़ प म म	ग़ म ध़ प	म – – –
छि र क त	छी – ट छ	बि – ली श्री	रा – धे –
ग़ स ध़ नी़	स ग़ म म	ध़ नी़ गं सं	ध़ प म म
च – न्द न	भ र भ र	झो – री –	हो – – –

अन्तरा

ग़ म ध़ नी़	सं नी़ सं सं	ध़ नी़ गं सं	ध़ प म म
अ बी र गु	ला – ल वि	वि ध रं ग	सों –धो –
ग़ म ध़ प	म ग़ स नी़	ध़ नी़ स ग़	म ग़ म म
लो – च न	भ र भ र	रो – री –	हो – – –

स्थायी

स स म ग़	म म म म	ग़ म ध़ प	म ग़ स स
स - र्व स्व	कि यो – –	र सि क कु	मा – री –
नी़ स ध़ नी़	स ग़ म म	ध़ नी़ गं सं	ध़ प म म
प्रे - म फं	द ही ही –	दो – री –	हो – – –

अन्तरा

ग़ म ध़ नी़	सं नी़ सं सं	ध़ नी़ गं सं	ध प म म
सु – र –	प्र भू -गि र	ध र न ला	– ल कों –
ग़ म ध प	म ग़ स नी़	ध़ नी़ स ग़	म ग़ म म
दे - र ही	प्रे – म अ	को – री –	हो – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग:- मीरामल्हार

ग ध नी दोनोंरूप ले कोमल तीव्र संभार,म स वादी सम्वादी ते सुन मीरामल्हार । इस रागका थाट काफी हैइसकी जाती सम्पूर्ण है इसका वादी और संवादी म/स है यह राग अडाना और मल्हार के मिश्रण से बना है आरोह/अवरोह इस प्रकार है :- नी॒ स रे ग॒ म प, नी॒ ध नि सं / सं ध॒ नी॒ प,म प ग॒ म रे ऩी स

पद

घन मृदंग रसभेदसों बाजत नाचत चपला चंचलगति माईरी,
कोकिला अलापत पपैया उरप लेत,मोर मधुर सुर गावत माईरी ।। १ ।।
दादुर ताल धर धुन सुनियतहैं, रुनझुन रुनझुन नूपुर बाजत,
तानसेन केप्रभु तुम बहुनायक कुञ्ज महल में राजत दोउ माईरी ।। २ ।।

मुखड़ा ताल:-झपताल

x	२	०	३	x	२	०	३
नी॒ ध	नीसं रें	नीसं	ध॒ नी॒ प	म म	प म प	ग॒ म	रे रे स
घ –	न – म॒	दं ग	र – स	भे द	सों – –	बा –	ज – त
स स	म म रे	प प	प म प	नी॒ ध	नी सं रें	नि सं	ध॒ नी॒ प
ना –	च – त	च प	ला – चं	च ल	ग – ति	मा ई	रि – –

अन्तरा

म प	नी॒ ध नी	सं नी	सं सं सं	नी सं	रें रें सं	ध॒ नी॒	प प प
को कि	ला – अ	ला –	प – त	प पै	या – उ	र प	ले - त
म प	नी नी सं	गं॒ मं	रें रें सं	नी सं	रें रें सं	ध॒ नी॒	प म प
मो –	र – म	धु –	र स्व –	र गा	– व त	मा इ	रि – –

स्थायी

स स	म म रे	प प	प म प	ग॒ ग॒	म रे स	रे रे	स स स
दा –	दु – र	ता ल	ध – र	धु न	सु – नि	य त	है – –
नी॒ ध॒	ऩी ऩी स	रे रे	स स स	म रे	प म प	ग॒ म	रे रे स
रु न	झु – न	रु न	झु – न	नु –	पु – र	बा –	ज – त

अंतरा

म प	नि॒ ध नी	सं नी	सं सं सं	नीसं	रें रें सं	ध॒ नी॒	प प प
ता न	से – न	के -	प्र – भु	तु म	ब- हू	ना –	य – क
म प	नी नी सं	गं॒ मं	रें रें सं	नी सं	रें रें सं	ध॒ नी॒	प म प
कुं –	ज – म	हे –	ल में –	रा –	ज - त	दो उ	मा ई री

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग :- पहाड़ी

औडव करकें गाईये मन्नी को दीजे त्याग, स प वादी संवादी ते कहत पहाड़ी राग। इस राग का थाट है बिलावल इसकी जाती औडव है इसका वादी संवादी है स, प इस राग में गुणीजन सभी स्वरों का प्रयोग करते है इस राग को ठुमरी गायन में या भजन गायन में अधिक गाते है. इसके आरोह/अवरोह इस प्रकार हैं:- स,रे,ग,प,ध,सं/ सं,ध,प,ग,रे,स

पकड़ - ध, स, रे; म, रे, म

पद

यह पद बाललीला का है:-

शोभित कर नवनीत लिये, घुटुरुन चलत रेनुतन मंडित मुखदधि लेपकिये ।। १ ।।
चारू कपोल लोल लोचन छबी, गोरोचन को तिलक किये,
लर लटकन मानों मत्त मधुपगन मादिक मधुही पिए ।। २ ।।
कठुला कंठ वज्र केहरी नख राजतहै सखी रुचिर हिये,
सूरदास एको पल यह सुख, कहा भयो कल्प जिए ।। ३ ।।

मुखड़ा ताल : त्रिताल

३	x	२	०
ध़ स रेम रे	म म म म	ध ध़ ध सं	ध प म म
शो - भि- त	क र न व	नी – त ली	ये – – –

अंन्तरा

म प धसं ध	सं सं सं सं	ध सं रें सं	ध म प प
घु टु रु- न	च ल त रें	– नु त न	मं – डी त
प प प प	ध म प सं	ध ध म म	रेम पम रे सा
मु ख द धि	ले- प की	ये – – –	– – – –

स्थायी

ध़ स रेम रे	म म म म	ध ध़ ध सं	ध प म म
चा – रू क	पो – ल लो	– ल लो –	च न छ बि
ग प म ग	रे स रे ध़	ध़ स रेम रे	म म म म
गो – रो –	च न को –	ति ल क दि	ये – – –

Scanned by CamScanner

अन्तरा

म प धसं ध	सं सं सं सं	ध सं रें सं	ध म प प
ल र ल –	ट क न मा	नों म त्त म	धु प ग न
प प प प	ध म प सं	ध ध म म	रेम पम रे सा
मा - दि क	म धु ही पि	ये – – –	– – – –

स्थायी

ध़ स रेम रे	म म म म	ध ध ध सं	ध प म म
क ठु ला –	कं – ठ व	– ज्र के –	ह री न ख
ग प म ग	रे स रे ध़	ध़ स रेम रे	म म म म
रा – ज त	है – स खी	रु चि र – हि	ये – – –

अन्तरा

म प धसं ध	सं सं सं सं	ध सं रें सं	ध म रे स
सू - र-	दा - स ए	को – प ल	य ह सु ख
प प प प	ध म प सं	ध ध म म	रेम पम रे सा
क हा भ यो	क –ल्प जि	ए – – –	– – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : बसंत - मुखरी

इस रागका वादी स्वर ध और संवादी स्वर है रे इसकी जाती है षाडव सम्पूर्ण इसका थाट है भेरव इस राग के पूर्वांग में भेरव और उत्तराग में भेरवी का संयोग है इसके आरोह अवरोह इस प्रकार है:- स रे ग रे, म प ध नी ध सं / सं नी ध प, म रे स यह राग मंगला श्रृंगार में गा सकते हैं

पद

आज हरी खेलत फाग बनी,
ईत गोरी रोरी भरझोरी,उत गोकुल को धनी ।। १ ।।
चोवा को ढोवा कर राख्यो,केसर कीच सनी
अबीर गुलाल उडावत गावत, सारी जात सनी ।। २ ।।
हाथन लिये कनक पिचकाई ग्वालन छूटी तनी,
नन्ददासप्रभु संग होरी,खेलत मुरमुर जात अनी ।। ३ ।।

मुखड़ा त्रिताल

x	२	०	३
ध ध ध ध	प प म म	प प प प	म म ग म
खे – ल त	फा – ग ब	नी – – –	आ ज ह री

अन्तरा

धनी सं नि ध	प ध म म	नि ध प म	रे रे स स
ई- त गो –	री – रो -	री - भ र	झो – री -
स स म म	नि नी प नी	रें सं नि ध	प म ग म
उ त गो –	कु ल को -	ध नी - -	- - - -

स्थायी

स स स रे	म म म म	प ध प म	रे रे स स
चो – वा –	को – ढो –	वा – क र	रा – ख्यो –
प ध प म	रे रे स ध	स स स स	– – – –
के – स र	की – च स	नी – – –	आ ज ह री

Scanned by CamScanner

अन्तरा

म म ध ध	सं सं सं सं	रें रें रे रें	मं रें सं सं
अ बी र गु	ला – ल उ	डा - व त	गा – व त
सं सं नी ध	प ध म म	नी ध प म	रे रे स स
सा – री –	जा – त स	नी – – –	आ ज ह री

स्थायी

स स स रे	म म म म	प ध प म	रे रे स स
हा – थ न	लि ये – क	न क पि च	का – री –
प ध प म	रे रे स ध	स स स स	– – – –
ग्वा – ल न	छू – टी –	त नी – –	– – – –

अन्तरा

म म ध ध	सं सं सं सं	रें रें रे रें	मं रें सं सं
नं – द दा	– स प्र भू	सं – – ग	हो – रि –
सं सं नी ध	प ध म म	नी ध प म	रे रे स स
खे – ल त	मु र मु र	जा – त अ	नी – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : चारुकेशी

इसका थाट है आसावरी इसकी जातीहै संपूर्ण इसका वादी स्वर है प और सम्वादी स्वर है स इसके आरोह अवरोह इसप्रकार है:-स,रे,ग,म,प ध़ नी़ सं,/सं नी़ ध़ प म ग रे स

पद

गिरिधर जब अपनों करजानें, ताको मन भक्तन की सेवा, भक्त चरण रज सदा बखाने ।।१।।
भक्तन में मति भक्तन में गति, हरिजन हरी एक करजानें,
क्रष्णदास मन वचन करम करि, हरिजन संगे हरी उर आनें ।। २।।

मुखड़ा ताल: त्रिताल

३	x	२	०
ग रे नि़ स	ग ग म म	ध़ नी़ सं नी़	ध़ प म म
गि रि ध र	ज ब अ प	नों – क र	जा – नें –

अन्तरा

ग म ध़ नी़	सं सं सं सं	सं रें गं रें	सं नी़ ध़ प
जा – को –	म न भ –	क्त न की –	से – वा –
नी़ नी़ ध़ प	म ग रे स	ग म ध़ नी़	ध़ ध प म
भ - क्त च	र ण र ज	स दा – ब	खा – नें –

स्थायी

स रे ग म	प प प प	ध़ नी़ सं नी़	ध़ प म म
भ – क्त न	में – म ति	भ – क्त न	में – ग ति
ग रे नी़ स	ग ग म प	ध़ नी़ गं सं	ध़ प ग म
ह रि ज न	ह री – ए	– क क र	जा – नें –

अन्तरा

ग म ध़ नी़	सं सं सं सं	सं रें गं रें	सं नी़ ध़ प
क्र –ष्ण दा	– स म न	व च न क	र म क रि
नी़ नी़ ध़ प	म ग रे स	ग म ध़ नी़	ध़ ध़ प म
ह रि ज न	सं – गे –	ह री उ र	आ – नें –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : जन संमोहीनी

इस राग का थाट है खमाच इसकी जाती है औडव-षाडव है यह राग कलावती से बहुत मिलता है इसके आरोह / अवरोह इस प्रकार है:-

स, ग, प, ध, नी, सं / सं नी ध प ,ग प ध प, ग रे नी स

पद

दुल्हे मदन गोपालराधेजू नव दुल्ही, मानों श्याम तमाल के ढिंग,कनक बेल उलही ।। १ ।।
रूप भूप युवराज बिराजत, बेस एक तुलही,
हरि नारायण श्यामदास के प्रभुसों चाह हुती सोजु लही ।। २ ।।

मुखड़ा ताल: रूपक

०	२	३	०	२	३
नि ध प	ग ग रे नी	स स स	ग प ध ध	संनी धप गप	प प धनी सं
दू ल्हे –	म द न गो	पा – ल	रा धे जू –	नव दुल्ह ही	– – — –

अन्तरा

गप निध नी	सं सं सं सं	नी सं गं	रें रें सं सं
मा- नों- –	श्या– म त	मा – ल	के – ढिं ग
नी नी नी	ध ध ध नी	ध प म	गप धप गरे स
क न क	बे ल उ ल	ही – –	– – – –

स्थायी

स ग ग	प प प प	गप ध नी	ध ध प प
रू – प	भू प यु व	रा- ज बि	रा – जे -
गप ध प	ग ग रे नी	स स स	ग प ध नी
बे – स	ए क तु लं	ही – –	– – – –

अन्तरा

गप निध नी	सं सं सं सं	नी सं गं	रें रें सं सं
हरी ना- रा	य ण स्या –	म दा स	के प्र भु सों
नी नी नी	ध ध नी सं	ध ध प	गप धप गरे सा
चा ह हु	तिसों जु ल	ही – –	— — — —

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : प्ररज

दोनों मध्यम लीजिये रि ध कोमल सुखदाइ, स, प, वादी संवादी लखि गुनिजन परज सुहाइ।

इस राग का थाट है पूर्वी जाती सम्पूर्ण है इसके आरोह/अवरोह इस प्रकार है:-

नी, स, ग, म॑, प ध नी सं / सं नी ध प म ग रे स.

पद

देखो देखो ब्रजकी बीथन महियाँ खेलत है हरी होरी,
गीत विचित्र कोलाहल कोतुक संग सखा लख कोरी, ।। १ ।।
आई झूम झूम झुंडन जुरी अगणित गीकुल गोरी
तिनमें युवती कदम्ब सिरोमनि राधा नवल किशोरी ।। २ ।।
छिरकत ग्वाल बाल अबलन पर,बूका बंदन रोरी
अरुण आकाश देख संध्या भ्रम मुनि मनसा भई बोरी ।। ३ ।।
रपटत चरन कीच अरगजा की केसर कुमकुम घोरी,
कही न जाय गडाधर पेकछू बुद्धि बल मती भइ बोरि ।। ४ ।।

मुखड़ा ताल : विलम्बित धमार

३	x	२	०
म॑ ध म॑ध नीसं	रें सं सं नी ध प प	म॑ ग ग	म॑ ध नी सं
दे खो देखो देखो	ब्र ज की बी – थ न	बी थ न	म हि याँ –
सं नी ध	प प म॑ ग	म॑ ग म॑	ग रे सा सा
खे ल त	हें – ह री	हो – री	– – – –

अन्तरा

x	२	०	३
ध म॑ ध	सं नी रें सं	नि रे गं गं	म॑ं गं रें सं
ति न में	यु व ति –	कदम्ब शि	रो – म नी
सं नी ध	प प म॑ ग	म॑ ग म॑	ग रे स स
रा - धा	न व ल कि	शो — री	– – – –

स्थायी

सस म म	म म म म	मम ग ग	म॑ ध नी सं
छिर क त	ग्वा ल बा ल	अ ब ल	न प र बू
सं नि ध	प प म॑ ग	म॑ ग म॑	ग रे स स
का – बं	– द न रो	– – –	री – – –

Scanned by CamScanner

अंतरा

ध म ध	सं नी रें सं	नीरें गं गं	मं गं रें सं
अरु ण आ	का – श –	देख सं ध्या-	– भ्र म –
संसं नी ध	प प म ग	म ग ग	म ध मध नीसं
मुनी म न	सा – भ ई	बो – रि	दे खो देखो देखो

स्थायी

ससु म म	म म म म	मम ग ग	म ध नी सं
रप ट त	च र न की-	चअ र ग	जा की– –
सं नी ध	प प म ग	म ग म	ग रे स स
के स र	कु म कु म	घो – री	– – – –

अन्तरा

ध म ध	सं नी रें सं	नीरें गं गं	मं गं रें सं
क ही न	जा - य ग	दा– ध र	पे – क छु
संसं नी ध	प प म ग	म ग ग	म ध मध नीसं
बुध्धि ब ल	मति भ ई	बो – रि	दे खो देखो देखो

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग: जोग कोंश ताल त्रिताल

रे प वर्जित औडव मधुर, ग ध कोमल सुर मान,ग नी वादी संवादी ते जोग कोंश पहचान

यह राग चन्द्र कोंष से मिलता है इसमें दोनों गंधार का प्रयोग होता है इसके आरोह/अवरोह इस प्रकार है:- स ,ग म ध नी सं/ सं नी ध म ग म ग स

पद

बोलेरि आली कुहुक कुहुक कोयलिया,
मैं बिरहन कहा करूं पिया बिन,हूक उठत मेरे जिया ।। १ ।।
तेसियेमंदहेमंत महाऋतु,कांपत थर थर जिया,
रसिकप्रीतम बिन कल न परत है सुन आये घर पिया ।। २ ।।

मुखड़ा

३	x	२	०
ग म ध नी	सं सं नी सं	नी ध म म	ग म ग स
ले रि आ ली	कु हु क कु	हु क को –	य लि या बो

अंतरा

x	२	०	३
ग म ध नी	सं नी सं सं	नी सं गं गं	मं गं सं सं
मैं – बि र	हि न क हा	क रूं – पि	या – बि न
सं सं नी सं	नी ध म म	ग म ग स	– – – –
हु – क उ	ठ त मे रे	जि – या बो	ले री आ ली

स्थायी

स स म ग	म म म म	ग ग म म	ग म ग स
ते - सि ये	मं – द हे	मं – त म	हा – रि तु
ग म ग स	ऩी स ध ऩी	स स म ग	म म म म
कां – प त	थ र थ र	जि – – –	या – – –

अंतरा

ग म ध नी	सं नी सं सं	नी सं गं गं	मं गं सं सं
र सि क प्री	त म बि न	क ल न प	र त है –
सं सं नी सं	नी ध म म	ग म ग स	– – – –
सु न आ -	ये - घ र	पि - या बो	ले री आ ले

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग - सुघराई

ग कोमल संवाद प सदोनों नी मनभाई चढते धैवत त्याग कर गावत गुनी सुघराई ।
इस रागका थाट है काफी इसकी जाती शाडव सम्पूर्ण है यह राग वर्षाऋतुमें अधिक गाया जाताहै अन्य बधाइयों में भी इसराग को गासकते हैं इसके आरोह अवरोह इसप्रकार हैं;-
स,रे,म,ग,म,प,नी,सं /सं,नी,ध,प,म,प,ग,म,रे,स

पद

फगुआ के मिस छलबल लालकों,रंगन रगमगो कीजे,
यह औसर होरी को गोरी सुख ले सुखकिन दीजे ।। १ ।।
करत सेंतको संकोच सकुच जिय इन सकुचन कहीधों कहाकीजे,
घरकों छांड धाय गिरिधर पियकों निधरकह्वे रस पीजे ।। २ ।।

मुखड़ा त्रिताल

०	३	X	२
सं सं नी प	ग ग स रे	ग ग म प	रे रे स स
फ गु आ -	के - मि स	छ ल ब ल	ला ल के –
स स म रे	प प म प	मप निसं पनी संरें	सं सं सं सं
रं - ग न	र ग म गो	की- – – –	जे – – –

अन्तरा

म प निप नी	सं नी सं सं	नी सं रें सं	नी सं नी प
य ह औ- –	स र हो –	री – को –	गो – रि –
प रें सं रें	नी सं नी प	ग ग म प	ग म रे स
सु ख ले –	सु ख कि न	दी – – –	जे – – –

स्थायी

स स म रे	प प म प	ग ग ग म	रे रे स स
क र त सें	– त को सं	को – च स	कु च जि य
प रें सं रें	नी सं नी प	ग ग ग म	रे रे स स
इ न स कु	च न क ही	धों - क हा	की – जे –

अन्तरा

म प नीप नी	सं नी सं सं	नी सं रें सं	नी सं नी प
घ र कों- –	छां – ड धा	– य गि र	ध र पि य
प रें सं रें	नी सं नी प	ग ग म प	ग म रे स
कों– नि ध	र क ह्वे –	र स पी –	जे – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरि ।।

चार रागों की रागमाला

यह पद चार रागों की राग माला है ।-

पद

चक्र के धरन हार गरुड़ के असवार नन्दके कुमार मेरी संकट निवारोजू,
यमला अर्जुन तारे गज ग्राह को उबारे,नागके नाथन हार मेरी तू आधार है ।। १ ।।
गिरवर कर धारयौ इन्द्रहू कौं गर्व गार्यौ ब्रजके रक्षण हार बिरद बिचारो जू,
द्रुपद सुताकी बेर तबक्यों न कीनी बेर, अबकहा बेर सूरसेवक तिहारो ।। २ ।।

ताल : एकताल

राग-सारंग मुखड़ा

X	०	२	०	३	४
नि नी	नी सं	सं रें	नी सं	नी नी	प प
च –	क्र के	– ध	र –	न हा	– र
म रे	म नि	प प	म रे	स ऩी	स स
ग रु	– ड़	– के	अ –	स वा	– र
ऩि ऩी	स म	रे म	प प	म नी	म प
न –	न्द के	– कु	मा –	र में	– रो
प रें	रें रें	सं रें	नी सं	प नी	म प
सं –	– क	ट नी	वा –	– रो	– जु

राग : धनाश्री

अन्तरा

प प	प ग	ग म	प नी	नी सं	सं स
य –	म ला	– अ	र्जु –	न ता	– रें
प नी	नी सं	गं रें	नी सं	नी ध	प प
ग –	ज ग्रा	– ह	कों –	उ बा	– रे
म म	प ग	ग म	प नी	नी सं	सं सं
ना –	ग के	– ना	थ –	न हा	– र
सं नी	ध प	प प	म ग	म ग	रे स
मे –	रो तू	– आ	धा –	र है	– –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग : केदार

स्थायी

प प	प प	प प	ध प	म म	म म
गी -	र व	– र	क –	र धा	– रयो
ग ग	म ध	प प	म म	स रे	रे स
इं द्र	हू –	को ग	– गर्व	गा –	रयो –
स स	स म	म ग	प प	म़ ध	प प
ब्र –	ज के	– र	क्ष –	ण हा	– र
म़ म	प ध	सं ध	म़ प	म रे	रे स
बि र	– द	– वि	चा –	रो जु	– –

राग : इमन

अन्तरा

म़ ग	ग म़	ध ध	सं सं	नी रें	सं सं
द्रु प	- द	- सु	ता –	की बे	– र
नि नी	ध नी	रें रें	गं रें	सं सं	सं सं
त -	ब क्यों	- न	की –	नि बे	– र
नी रें	गं रें	सं नि	ध नी	ध प	म़ ग
अ –	ब क	– हा	बे –	र सू	– र
म़ ध	सं नी	ध प	म़ ग	रे स	स स
से –	व क	– ति	हा –	रो जू	– –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

पांच रगों की रागमाला

यह रागमाला वसंतपंचमीसे पहेले एकम से लेकर चोथ तक गाई जाती है:-

पद ताल : झपताल

एमनमान मेरो कह्यो काहेको प्यारे प्यारीतू,
प्रथम ही हरी गुणगाइये, याही ते सुघराइ हो तू ।। १ ।।
मालकोश की तान लेले, राखत रुप बिहाय,
द्वारकेषप्रभु बसंत मनावत याहिते बढत सुहाग ।। २ ।।

इमन

x	२	०	३	x	२	०	३
नि ध	प प प	म प	म॑ ग ग	रे ऩी	रे ग प	रे गा	रे स स
ए -	म – न	मा -	न- -	में -	रो – क	ह्यो -	- - -
ऩी ध	ऩी रे रे	ग रे	म॑ ग ग	म॑ ध	सं नी ध	प म॑	ग रे स
का -	हे – को	प्या –	रे - -	प्या –	रि - -	तु -	- - -

सुघराई

म प	नि॒ प नी॒	सं नी॒	सं सं सं	नि॒ सं	रें रें सं	नी॒ सं	नि॒ प प
प्र थ	म - ही	ह री	गु - ण	गा -	- - यी	ये -	- - -
प रें	सं सं रें	नी सं	नी॒ प प	ग॒ ग॒	म म प	रे रे	स स स
या -	हि - -	ते -	सु – घ	रा -	इ - -	हो -	तू - -

मालकोंश

सं सं	ध॒ ध॒ नी॒	ध॒ ध॒	म म म	ग॒ स	ग॒ म म	ग॒ म	ग॒ स स
मों -	ल - -	को ष	की - -	ता -	- - न	ले -	ले - -

बिहाग

स स	ग ग म	प प	नि ध नी	सं सं	नी ध प	म॑ प	म ग म॑
रा -	ख – त	रु –	प – बि	हा –	– – –	– –	य – –

वसंत

ध॒ ध॒	ध॒ म॑ ध॒	सं नी	रें॒ सं सं	नि रें॒	गं गं गं	म॑ गं	रें॒ रें॒ सं
द्वा –	र – –	के ष	प्र – भु	ब सं	त -खी	ला –	व – त
सं सं	सं सं सं	नी सं	नी ध॒ ध॒	म॑ ग	म॑ नी ध॒	म॑ ग	रे॒ रे॒ स
या -	ही – ते	ब ढ	त - सु	हा -	- - -	ग -	- - -

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग - केदार

दो मध्यम केदार में, सम संवाद संभार। आरोहन रेग बरजकर उत्तरत अल्प गंधार

इस राग का थाट कल्याण है। इसकी जाती औडव संपूर्ण है इसका वादी स संवादी म है। इस में दोनों मध्यम का प्रयोग होता हैं। यह शीतल प्रगति का राग है, इसलिये इसे उष्णकाल शयन समय या विनती आश्रय में गाते है।

इसके आरोह अवरोह इस प्रकार है:-

स म, म प ध प, नी ध, सं / सं, नी ध, प, मं प, ध प, ग म, रे स

पद

लालन नेक गाइये ।।

प्राण पियारे अधर सुन्दर घर मोहन वेणु बजाइये ।।१।।

परम दुसह बिरहानल व्यापत तन सब जरत छुराइयै ।।

अमृत हास मुसकान बलैया लेहों नैनन की तपत बुजाइये ।।२।।

उभय कर कमल हृदय सों परसके बिरहन मरत जिवाइये ।।

छीतस्वामी गिरधर तुमसे पति, पूरण भाग्य ते पाइये ।।३।।

मुखड़ा - ताल त्रिताल

X	२	०	३
सं सं ध प	मं प ध प	म म रे स	रे रे स स
ला – ल न	ने – – क	गा – – ई	यै – – –

अन्तरा

प प सं सं	सं सं सं सं	ध नी सं रें	नि सं ध प
प्रा - न पि	या – रे –	अ ध र सुं	द र ध र
गं गं गं मं	रें रें सं स	नि सं ध प	मं प म म
मो - ह न	वे - णु ब	जा – – ई	ये – – –

स्थायी

स स म ग	प प प प	मं प ध प	म म रे स
प र म दु	स ह बि र	हा – न ल	व्या - प त
ग म ध प	ग म रे स	रे रे स स	– – – –
त न स ब	ज र त छु	डा – – ई	ये – – –

Scanned by CamScanner

अन्तरा

प प सं स	सं सं सं सं	ध नी सं रे	निं सं ध प
अ मृ त ह्म	– स मु स	का – न ब	लै या ले हो
गं गं गं मं	रें रें सं स	नि सं ध प	म प म म
नै न न की	त प त बु	झा – – इ	यै – – –

स्थायी

स स म ग	प प प प	म प ध प	म म रे स
उ भ य क	र क म ल	ह द य सो	प र स के
ग ग ध प	ग म रे स	रे रे स स	म ग प प
बि र हि न	म र त जि	वा – – इ	ये – – –

अन्तरा

प प सं स	सं सं सं सं	ध नी सं रे	निं सं ध प
छी – त स्वा	– मी गि रि	ध र तु म	सौ – प ति
गं गं गं मं	रें रें सं स	नि सं ध प	म प म म
पू – र ण	भा – ग्य ते	पा – – ई	ये – – –

Scanned by CamScanner

।। श्री हरिः ।।

राग:- शिवरंजनी

ग कोमल सम्वाद प स मनी सुर दिये हटाय, मध्यरात्रि औडव मधुर शिवरंजनी कहाय।
यह राग बहुत ही कर्ण प्रिय है इसका थाट काफी है इस की जाती औडव/औडव है इसका वादी/ संवादी प स है इस राग में बिनती आश्रय के पद बहुत अच्छे लगते है इसका आरोह/अवरोह इस प्रकार है:- स रे ग॒ प ध सं सं ध प ग॒ रे स

कृपातो लालनजुकी चहिये,
उन्हें करी करी सों आच्छी अपने शिर सहिये ।। १ ।।
अपनों दोष विचार सखीरी उनसों कछू ना कहिये,
सूर कछू अब कहेवे की नाहीं श्याम चरण चित लहिये ।। २ ।।

मुखड़ा - त्रिताल

३	X	२	०
रे ग॒ प प	ध सं ध प	ग॒ ग॒ रे स	रे रे स स
पा – तो –	ला – ल न	जु – की –	च ही ये कृ

अन्तरा

X	२	०	३
प प धसं ध	सं सं सं सं	ध सं रें गं	रें रें सं सं
उ न्हें – क	री – – क	री – सों –	आ – छी –
सं रें सं ध	प ग॒ रे ग॒	रे रे स स	रे ग॒ प प
अ प ने -	शि – र स	हि – ये कृ	पा – तो –

स्थायी

स रे ग॒ प	ध ध प प	ध सं ध प	ग॒ ग॒ रे स
अ प नों –	दो – ष वि	चा – र स	खी – री –
ध सं ध प	ग॒ ग॒ रे स	रे रे स स	रे ग॒ प प
उ न सों –	क छू ना –	क हि ये –	– – – –

अन्तरा

प प धसं ध	सं सं सं सं	ध सं रें गं	रें रें सं सं
सू – र क	छू – अ ब	क ह वे की	ना – ही –
सं रें सं ध	प ग॒ रे ग॒	रे रे स स	रे ग॒ प प
श्या – मच	र न चि त	ल हीये कृ	पा – तो –

Scanned by CamScanner

॥ શ્રી હરિઃ ॥

સૂરદાસજીનો સંગીત - પક્ષ

ભારતીય સંગીત પદ્ધતિમાં વલ્લભ સંપ્રદાયના સંગીતની પોતાની વિશિષ્ટ શૈલી અને પરમ્પરા છે. આની સ્થાપના શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્યજીના બીજા પુત્ર શ્રી વિઠ્ઠલનાથજી દ્વારા થઈ હતી. અષ્ટછાપના કવિઓએ જે શૈલીમાં ગીત-છન્દની રચના કરી છે એ વૈદિક છન્દગાનની પદ્ધતિ પર અવલંબિત છે.

વૈદિક સાહિત્યમાં દ્વિપાદ છન્દ, ત્રિપાદ છન્દ આદિનો ઉલ્લેખ મળે છે. એ જ આધાર પર બે અથવા ત્રણ કીડીનાં લઘુ છન્દોના પ્રકાર નિત્ય કીર્તનમાં જોવાય છે. જ્યાં ઉત્સવ અને ધમારનું પ્રકરણ છે ત્યાં પ્રબન્ધ-રચના લીલાવર્ણનાત્મક થવાથી આને પ્રબન્ધ ગાન કહેવાય તો એમાં અતિશયોક્તિ નથી.

આ ગાન શૈલીની પોતાની સ્વતંત્ર પદ્ધતિ છે. જેમાં સ્વરોનાં શ્રુતિ ભેદ દ્વારા અભિવ્યંજન થાય છે. ઘણાં સંગીતજ્ઞ ધ્રુપદ શૈલીમાં ધ્રુપદ શબ્દને લઈને એવી વ્યાખ્યા કરે છે કે જેવી રીતે, ધ્રુવ ચાલતો ફરતો નથી એથી જ છન્દગાનની લયમાં હર અને ફર ન હોવી જોઈએ. પરન્તુ આ ફક્ત શબ્દસહ વ્યાખ્યા માત્ર છે. જેનું સંગીતમાં કોઈ પ્રયોજન નથી. કેમ કે વગર હલનચલન કોઈ પણ લય બની જ નથી શક્તી, સ્વરોનું સંચારણ અસંભવ છે અને વગર સ્વર લયનાં સંચાર કે સંગીત બની જ નથી શક્તો. અષ્ટછાપ અને શ્રી સૂરના સંગીતની મૌલિકતા એનાથી ભિન્ન છે. સાથે જ એની એક વિશેષતા એ છે કે એને ગ્રામીણ રૂપથી ભજનની શૈલીમાં પણ ગાઈ શકાય છે. એને ધ્રુપદ શૈલીની સાથે જોડવાની વાત જ અસ્થાને છે. કારણ કે ધ્રુપદ છન્દ વિશેષનું નામ છે અને એને અનેક તાલોમાં ગાઈ શકાય છે. એના ચાર ચરણ હોવા જોઈએ પછી એક જ ચરણ ચાર આવૃત્તિમાં પૂર્ણ હોવા જોઈએ. કીર્તનોમાં આ પરમ્પરાનું અનુસરણ મળે અને ધ્રુપદ ગાયકોના ઘણાખરા છન્દો અષ્ટછાપના પદોનું જ રૂપાન્તર છે. દાખલા તરીકે વિન્દાદીનનું પદ "નિરતતઅંગ" આ મૂળ પદ શ્રી સૂરદાસજીનું જ છે. એવી જ રીતે ડાગર બન્ધુનાં ધ્રુપદ છન્દોમાં પ્રાચીન છન્દે અષ્ટ છાપની કીર્તન પ્રાણાલીનામાં સંપૂર્ણ મળે છે અને એમની પાસે એ અપૂર્ણ છે. ખ્યાલ ગાયકીમાં પણ "મેરે પ્રિય રસિયા" નાયકીનો આ ખ્યાલ જેને ખ્યાલ કહેવાય છે, કીર્તન સાહિત્યનું જ પદ

Scanned by CamScanner

છે. એવી જ રીતે સૂરદાસ અને અષ્ટછાપનાં પદોની જે વિશેષતા છે તે વર્તમાન તથા કથિત શાસ્ત્રીય સંગીતથી નથી જોડી શકાતી. ખ્યાલ ગાવાનો રિવાજ પહેલા માર્ગો પર કે ગામોમાં તમાશાની વખતે જ હતો એને જ આલાપની સાથે સ્વર પ્રસ્તાવ આપીને સદા રંગ આદિએ દરબારોમાં પ્રવિષ્ટ (દાખલ) કરાવ્યું પરન્તુ અષ્ટછાપની સંગીત શૈલી ની પ્રથમ ઉદ્‌ભાવના શ્રી સૂરનાં પદ ગાનથી પ્રારંભ થાય છે. વૈદિક સાહિત્યનાં "ઉદ્‌ગીત" થી જ મળે છે. ભાગવતમાં પણ વ્રજાંગનાઓનાં ગાને ને શ્રી શુક દેવ "યાસાં હરિ સીમન્તીની કથાદ્‌ ગીત" કહીને પરિચય આપે છે. કારણ કે વ્રજ ગોપી શ્રુતિરૂપા અને શ્રુતિરૂપા છે. શ્રુતિયોનું ઋષિઓ દ્વારા સામગાનની પદ્ધતિથી ગાનને પણ ઉદ્‌ગીત કહેવાય છે. જેને છન્દોગ્ય ઉપનિદ પદમાં પણ સ્પષ્ટ જોઈ શકાય છે. કીર્તનમાં પ્રાચીન કીર્તનકાર હો હો આદિ શબ્દોનો પ્રયોગ કરે છે. આ નાથદ્વારા અને અન્ય સ્થાનોનાં પ્રાચીન કીર્તનીયાઓનાં પદ ગાનમાં સાભળવામાં આવતું હતું એ ગન્ધર્વોનું જ નામ છે. જેનાં વતી ગાન વિધાનો પ્રચાર થયો છે. કીર્તન શૈલી માં ક્યારે લય પૂર્તિની માટે આ અક્ષરોનો પ્રયોગ થાય છે. જ્યાં છન્દોને ધ્રુપદ રૂપથી પ્રસ્તુત કરવામાં આવ્યાં છે. માટે આધુનિક શાસ્ત્રીય સંગીતનાં આધાર પર આનું સંશોધન સર્વથા ઉચિત થશે નહિં. પણ જે રાગ કીર્તનમાં કંઈ સ્વરભેદથી વિકૃત છે એમને વ્યવસ્થિત કરવું જોઈએ અને છન્દોનાં તાલ પર પણ અન્વેષણ થવું આવશ્યક છે. અન્યથા વિશુદ્ધ શૈલીમાં ઉચિત રૂપથી શબ્દોને પ્રસ્તુત ન કરી શકાય અને સમ, વિષમ માત્રાનાં તાલોમાં જ્યાં સ્વતઃ પોતાની શૈલીમાં પૂર્ણ થાય છે. એ જ એનો નિર્ધારિત તાલ થાય છે. જેવી રીતે ભુજંગ પ્રખ્યાત છન્દનાં અનુસરણ કરવાવાળા પદ સમતાલ અથવા સૂરમાં જ બેય હોય છે. એવી જ રીતે રાગોનો ક્રમ પણ કીર્તન શૈલીમાં ઋતુ કાળ મુજબ આરંભ થાય છે. જેમાં વસન્ત રાગની આલાપચારીની આજ્ઞા આચાર્યથી લેવાની પ્રથા આજે પણ પ્રચલિત છે.

કારણ કે અષ્ટછાપની પરમ્પરામાં વસન્તને જ રાગ માનવામાં આવ્યો છે. માલકોષને રાગ ન માની શકાય. તાંડવ સંપૂર્ણ હોવાથી ઐશ્વર્ય યુક્ત ધર્મી સ્વરૂપ બ્રહ્મનું સ્વરૂપ આ રાગોને માનવામાં આવે છે. જેવી રીતે ઋતુઓમાં કુસુમાકરને ઋતુરાજ કરીને પ્રાથમિકતા પ્રાપ્ત છે. એ ભગવદામિકા છે. સ્વરોમાં પણ પ્રધાન સ્વરને પડ્‌ જ કહેવાય છે. જેનાથી છ સ્વર ગુણ અથવા ધર્મ ઉત્પન્ન થયા એ જ પ્રધાન સ્વર છે.

Scanned by CamScanner

અનાહત નાદમાં પ્રથમ નાદ પ્રણવ જ માનવામાં આવતો. ભાગવત દર્શનમાં આને "નાદ રૂપો પરો હરિ:" આવો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ મળે છે. હરિ શબ્દની વ્યાખ્યામાં જે તાપ હરણ કરે છે એને હરિ કહેવાય છે. સંગીતથી ફક્ત તાપ જ હરણ નથી થતા. પણ રાગથી સદ્યપ્રીતિ ઉત્પન્ન થાય છે. માટે રાગને "સદ્યપ્રીતિ કેરા રાગ કહેવામાં આવ્યું છે. જેનાથી તત્કાલ સ્નેહ થાય છે એજ રાગ છે. એની રજકતા ભક્તોનો અનુરાગ છે. જેવી રીતે અભીરવામ નયના ગોપિઓનો અનુરાગ એ પૂર્ણ પર બ્રહ્મમાં ઉત્પન્ન થયો હતો. એ દિવ્ય અનુરાગના મૂળમાં વેણુનાદ જ કારણરૂપ છે. સાથે જ રંધ્ર પણ છે. વેણુ શબ્દની વ્યાખ્યા શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્ય "વશ્ય વશ્ય અણુ ઈતિ વેણુ" આવી રીતે કરે છે. બ્રહ્મનન્દ જ્યાં અણુ માત્ર પ્રતીત થાય છે. એ વેણુ છે. એનાં દ્વારા જ લીલા સૃષ્ટિનું નિયમન થાય છે અને એ રસાત્મક બ્રહ્મની દિવ્ય અનુભૂતિનું માધ્યમ પણ વેણુનાદ જ છે. જેનાં દ્વારા ભગવદ્ રાગ ઉત્પન્ન થાય છે. શ્રીસૂરના પદોમાં આનું સરસ વિવેચન છે.

શ્રી સૂરનાં સંગીતને વિશેષ મુખરિત કરવાનું શ્રેય શ્રી વિઠ્ઠલેશ પ્રભુ ચરણને જાય છે. કારણ કે તેઓ પોતે સારા વીણાવાદક અને ચિત્રકાર પણ હતા. એમનું રેખાચિત્રણ આજે પણ ઉપલબ્ધ છે, જે એમના બાલ્યકાળની કૃતિ કહેવાય છે. લીલાગાનની પ્રેરણા શ્રી મહાપ્રભુથી પ્રાપ્ત કરી શ્રી સૂરે ભગવત્સેવાની મહત્વપૂર્ણ ભૂમિકાનો નિર્વાહ જીવન પર્યંત કાર્યો છે. વર્તમાન સાહિત્યકાર ફક્ત સાહિત્યકાર જ છે. એમને શ્રી સૂરનાં સંગીતનો ગંભીર ધરાતળનો અત્યાર સુધીમાં પરિચય નથી થયો. સાથે જ સંગીતકાર પણ ફક્ત સંગીતકાર હોવાથી શ્રી સૂરનાં ગેય પદોની ગાન શૈલી ભજન શૈલી સમજીએનું યથાર્થ ગાન નથી કરી શક્તા. આનું મૂળ કારણ હ્રસ્વ દીર્ઘ અને ઉદાત્ત અને અનુદાત્ત સ્વરોની ઉત્થાનિકા કો ન સમજવું છે. અમે ખ્યાલ શૈલીમાં અસ્પષ્ટ અસ્ફુટ શબ્દોના પ્રયોગથી પદ ભંગનો અભ્યાસ જ બાધક છે.

શ્રીમદ્ વલ્લભાચાર્ય "રસ સમૂહોરાસ:" એવી વિત્પતિ ગાયત્રી ભાષ્યમાં કરે છે. એનાં આધારથી શ્રી સૂરનું સંગીત પણ સ્વરોનું રસાત્મક સ્વરૂપ જ છે. જેમાં વૈદિક સાહિત્યનાં ઔદ્ગાગ પ્રયોગ જ સ્પષ્ટ થાય છે. જેને વેદનાં ઉદ્ગાતા યજ્ઞનાં અવસર પર દેવતાઓની સ્તુતિનાં રૂપમાં ગાયા કરતા હતા. સેવા પણ બ્રહ્મયજ્ઞાત્મક છે. માટે એમાં કીર્તનનું સ્થઆન મહત્વપૂર્ણ છે. શ્રી સૂર અને અષ્ટછાપ કવિઓમાં જે પદ શૈલીની અભિવ્યંજના થાય છે એ જ વૈદિક ગાનનાં

Scanned by CamScanner

ઉદાત્ત અનુદાત્ત સ્વરિત સ્વરોની ગાન શૈલીને સમજ્યા વગર ગાયન કઠિનતા થશે. માટે "ભારતેન્દુ બાબુ હરિશચન્દ્ર "હમારે બ્રજ બાની હો વેદ" આવો ઉલ્લેખ કર્યો છે. વર્તમાન સાહિત્યકાર આને ફક્ત શ્રદ્ધાની દ્રષ્ટિથી જુએ છે. માટે એમને આનાં ગહન અન્વેષણની આવશ્યકતા ન લાગી પણ શ્રી સૂરની જન્માષ્ટમીની વધાઈથી થોડી તુલના કરીએ તો આનું સ્પષ્ટીકરણ થઈ જશે.

વેદની શ્રુતિથી "અજાય માનો બહુધા વિજાયતે એષોહ! દેવ પ્રદેશોનું સર્વા પૂર્વોહ જાત સૌગર્ભ અન્ત સખેવ જાત સજનિષ્યમાણા" આ ઉલ્લેખ છે ગીતામાં "પરિત્રાણાય સાધૂનામ વિનાશાય ચ દુષ્કૃતામ" આ શ્લોક પ્રસિદ્ધ છે. વ્યાજીના બ્રહ્મસૂત્રમાં "જન્માંધસ્ય યતઃ શાસ્ત્રમેયોનિત્પાત'આ સૂત્ર પ્રાપ્ત થાય છે. આવી રીતે ભાગવતમાં " દેવક્યાં દેવરૂપિવ્યાં વિષ્ણુ સર્વ ગુહાશય એવું નન્દસ્ત્વાત્મજ ઉત્પન્ને જાતા લ્હાદો મહામના" આ જન્મ પ્રકરણમાં સ્પષ્ટ છે. આ જ આધાર પર બ્રજ ભયો મહરિ કે પૂત જબ યહ બાત સુની." આ દેવગંધાર (દેવગાન) રાગમાં પદ જન્માષ્ટમીનાં દિવસે ગાવામાં આવે છે. આવી રીતે સૂરનાં સંગીતમાં પદોની સાથે પ્રસ્થાન ચતુષ્ટયની સંગતિ પણ પ્રાપ્ત થાય છે. શ્રી સૂરનાં સંગીતની આ વિશેષતા છે કે ગાયક અને લોકગાયક આને ભલી ભાતિ ગાઈ શકે છે.

Scanned by CamScanner